Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 7, Issue - 9, September - 2024

DOIs:10.2018/SS/202409009 --:-- Research Paper / Article / Review

प्रशिक्षित अभ्यर्थियों से निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की अपेक्षाओं का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ0 शिव स्वरूप शर्मा , गरिमा अवस्थी
'विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग, खण्डेलवाल कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश
shivss164@gmail.com
''एम.एड. छात्रा, खण्डेलवाल कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश

सारांश: प्रधानाध्यापक विद्यालय का नेतृत्वकर्ता है जिसके नेतृत्व में विद्यालय का सम्पूर्ण विकास होता है। समस्त विद्यालय की शैक्षिक व्यवस्था में एक प्रधानाध्यापक की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रधानाध्यापक के साथ-साथ विद्यालय के समस्त शिक्षकगण भी विद्यालय को विकसित करने में महत्वपूर्ण सहयोग होता है। शिक्षक राष्ट्र एवं समाज के विकास का एक अभिन्न अंग है। शिक्षक के बिना सहयोग के एक उन्नत एवं सभ्य समाज का निर्माण सम्भव नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है एवं न्यादर्श के रूप में 20 प्रधानाध्यापकों का चयन किया गया है और प्रधानाध्यापकों की अपेक्षाओं के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

मूलशब्दः प्रधानाध्यापक, अध्यापन शिक्षण कला, शैक्षिक व्यवस्था ।

1. प्रस्तावना :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज मंे उत्पन्न होता है और समाज में रहकर ही उसे अपना जीवन व्यतीत करना होता है। वही समाज का संरक्षक व निर्माता होता है। जिस प्रकार मनुष्य को भोजन से ऊर्जा प्राप्त होती है उसी प्रकार शिक्षा मनुष्य के जीवन में एक पौष्टिक पदार्थ है जिसके द्वारा उसे शक्ति व बल प्राप्त होता है। शिक्षा प्राप्त करने में शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का विकास होता है व एक शिक्षित व्यक्ति ही एक स्वस्थ व विकसित समाज का निर्माण कर सकता है।

प्रधानाध्यापक अपने विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले बी0एड0 प्रशिक्षु से उसके समस्त दायित्वों का निवर्हन करने की अपेक्षा करता है, जैसे शिक्षण कार्य सरल अथवा सुचारू रूप से करना जिससे विद्यार्थियों को समस्याएँ न हो, विद्यालय के सभी शिक्षण कार्यों को समयावधि पर सम्पन्न करना इत्यादि। प्रधानायाध्यापक एवं बी0एड0 शिक्षक के बिना विद्यालय में शिक्षण कार्य, अनुशासन इत्यादि सही ढंग चलाना सम्भव नहीं है क्योंकि प्रधानायाध्यापक विद्यालय की एक धूरी है और बी0एड0 शिक्षक उस धूरी के स्तम्भ है।

निजी विद्यालय के प्रधानाध्यापकों को बी0एड0 प्रशिक्षित अभ्यर्थी अर्थात् प्रशिक्षण के उपरान्त शिक्षण कार्य करने के लिए नियुक्त किये गये प्रशिक्षित शिक्षकों में विषय ज्ञान से सम्बन्धित सभी कौशलों के गुण विद्यालय होने चाहिए। वह अपने विषय से सम्बन्धित कितना ज्ञान रखते है इत्यादि। इसके अतिरिक्त उचित/रोचक शिक्षण विधि की जानकारी के साथ-साथ प्रस्तुत अध्ययन में निजी माध्यमिक विद्यालयों में बी0एड0 प्रशिक्षित शिक्षक में शिक्षण कौशल, व्यवसायिक कौशल, व्यक्तित्व सम्बन्धी कौशल, सामाजिक कौशल, मनोविज्ञान कौशल, तकनीकी सम्प्रेषण संचार कौशल एवं कॉन्उसिंलिंग एण्ड गाइडेन्स तथा अन्य सम्बन्धित कौशलों को

प्रशिक्षण के समय सीखते या सीखाया जाता है तथा अगर सीखकर आते है तो क्या वह विद्यालय में शिक्षण कार्य करते समय उनका प्रयोग करने में सक्षम होते हैं।

एक अच्छे अध्यापक में जो गुण विद्यमान होने चाहिए वह प्रशिक्षण के उपरान्त आते है या नहीं यदि आते है तो वह अपने शिक्षण कार्य में उनका उचित प्रकार से प्रयोग करके विद्यालय, विद्यार्थियों में विकसित करके शिक्षा के स्तर को उच्चकोटि का करने में कितना योगदान दे पाते हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

प्राचीन काल में पुस्तकों की उपलब्धता न होने के कारण एक अध्यापक जो भी ज्ञान रखता था वही छात्रों तक पहुँच0ाना ही उनका उद्देश्य था।

किन्तु आज के आधुनिक युग में सूचना तकनीकी सम्प्रेषण तकनीकी ने शिक्षा पर बहुत अधिक प्रभाव डाला है। अतः अध्यापक को ज्ञान की संकुचितता से निकलकर विस्तृतता को अपनाने की आवश्यकता है। साथ ही भिन्न तकनीकियों के ज्ञान के साथ इनके प्रयोग की क्षमता में निपुण होना भी आवश्यक है।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान दावा करते है कि उनके प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षु की अध्यापन के प्रति शिक्षण कौशलों में उपयुक्त विकास करते है।

वास्तव में क्या यह कार्यक्रम अध्यापक की अध्यापन शिक्षण कला में उपयुक्त विकास करते है। यह एक विचारणीय विषय है क्योंकि सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि अध्यापक की विशेषताएँ शिक्षण कौशल के तरीके और शिक्षकों की प्रभावशीलता आदि से सम्बन्धित अध्ययन ही अधिक हुए हैं।

इस सन्दर्भ में शिक्षण क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की अपेक्षाओं पर खरा उतर सकें। वर्तमान में शिक्षक शिक्षा के नियतिम पाठ्यक्रम में प्रवेश करने से पूर्व शिक्षक परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इस परीक्षा के माध्यम से प्रवेश कर रहे लोग अध्यापन के प्रति किस प्रकार की अभिरूचि रखते है? तथा बी0एड0 शिक्षण प्रशिक्षण के कार्यक्रम इतने महत्वपूर्ण है कि प्रशिक्षित अभ्यर्थियों की प्रशिक्षण कला पर सकारात्मक प्रभाव डाल पाए?

इन्हीं जिज्ञासाओं की संतुष्टि हेतु शोधकर्ता को प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई।

3. समस्या कथन :

बी0एड0 प्रशिक्षित अभ्यर्थियों से निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की अपेक्षाओं का आलोचनात्मक अध्ययन।

प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण

बी0एड0 प्रशिक्षित अभ्यर्थीः वह प्रशिक्षु जो शिक्षा के समस्त शैक्षिक कौशलों का महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त करते है।

निजी विद्यालयः निजी विद्यालय से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जो निजी संस्था अथवा ट्रस्ट से संचालित होते है।

प्रधानापध्यापकः प्रधानाध्याक शब्द दो शब्दों प्रधान$अध्यापक से मिलकर बना है। इसका अर्थ है विद्यालय के समस्त अध्यापकों में पद में सबसे बड़ा या प्रमुख।

प्रधानापध्यापक की अपेक्षाएँः प्रधानाध्यापक की अपेक्षाओं से तात्पर्य उनकी उम्मीद या आकांक्षा स्तर से है।

4. अध्ययन के उद्देश्य :

- बी0एड0 प्रशिक्षित अभ्यर्थियों से निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की अपेक्षाओं का अध्ययन करना।

- बी0एड0 प्रशिक्षित अभ्यर्थी में शिक्षण कौशल, व्यवसायिक कौशल, व्यक्तित्व सम्बन्धी कौशल, सामाजिक कौशल, मनोविज्ञान कौशल, तकनीकी सम्प्रेषण संचार कौशल, काउंसिलिंग एण्ड गाइडेन्स पाठ्य सहगामी क्रियाओं से सम्बन्धित कौशल, मूल्यांकन ज्ञान से सम्बन्धित विकसित कौशलों की अपेक्षाओं का अध्ययन करना।

5. अध्ययन का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत शोध कार्य में यादृच्छिक विधि से केवल निजी विद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

2. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निजी विद्यालयों के 30 प्रधानाध्यापकों का चयन किया गया है।

6. अध्ययन की विधि :

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में बरेली शहर के समस्त प्रधानाध्यापकों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा बरेली शहर के 30 प्रधानाध्यापकों को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया है।

अध्ययन का उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया है।

7. निष्कर्ष :

- 28 प्रधानाचर्यों ने माना कि बी0एड0 प्रशिक्षित शिक्षक अपने विषय के अतिरिक्त अन्य विषय का ज्ञान सिर्फ सामान्य स्तर का ही होता है।
- 25 प्रधानाचर्यों का मानना है कि बी0एड0 प्रशिक्षित शिक्षक केवल उदाहरणों के द्वारा समझाते हैं परन्तु उतने सटीक उदाहरणों का प्रयोग नहीं कर पाते हैं।
- 28 प्रधानाचर्यों ने माना है कि बी0एड0 प्रशिक्षित शिक्षक ब्लैक बोर्ड का प्रयोग अधिकांशतः शिक्षण विधि के अनुसार ही करते है।
- 28 विद्यालय प्रमुखों एवं प्रधानाचार्यों का मानना है कि बी0एड0 प्रशिक्षित शिक्षक सामाजिक कार्यों में कैसे छात्रों की भागीदारी कराना चाहिए इसका प्रशिक्षण नहीं प्राप्त होता है एवं विद्यालय में सम्पन्न होने वाली प्रतियोगितायें, वाद-विवाद प्रतियोगिता को कैसे सम्पन्न कराना चाहिए यह प्रशिक्षित होने के पश्चात् भी भलिभाँति सम्पन्न कराना नहीं आता है बल्कि विद्यालय में देखकर सीखते हैं।
- 26 प्रधानाचर्यों ने माना है कि बी0एड0 प्रशिक्षित शिक्षक मनोवैज्ञानिक तरीके से विद्यार्थियों की समस्याओं को नहीं समझ पाते हैं एवं विद्यार्थियों के अनुरूप सहायक सामग्री को बनाने में निपुण नहीं होते हैं।
- 28 विद्यालय प्रमुखों एवं प्रधानाचार्यों का मानना है कि बी0एड0 प्रशिक्षित शिक्षकों को उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन करना आता है।

- 27 प्रधानाचार्यों का मानना है कि प्रधानाध्यापक के साथ व्यवहारिक तो होते है परन्तु पद की गरिमा की वजह से कुछ फासला रहता है।
- 28 प्रधानाचार्यों ने कहा कि गूगल डॉक्स का प्रयोग अधिकांशता प्रशिक्षित शिक्षकों को नहीं आता है एवं इण्टरनेट एक्सेस का प्रयोग अधिकांशतः शिक्षकों को आता है।
- 28 प्रधानाचार्यों ने स्वीकार किया कि फेसबुक, व्हाट्सअप का सभी शिक्षक प्रयोग करते है पर शिक्षण कार्य में बहुत ही कम प्रयोग करते हैं।

8. शैक्षिक निहितार्थ

- बी0एड0 प्रशिक्षुओं को समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे वह अपनी कार्य प्रणाली में सुधार कर सकें। जिसके फलस्वरूप प्रधानाध्यापकों की अपेक्षायें उनसे उच्च हो सकें।
- विद्यालयों के वार्षिकोत्सव में बी0एड0 प्रशिक्षुओं को बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए जिससे विद्यालय के प्रधानाध्यापकों की उनके प्रति सकारात्मक अपेक्षायें हो।
- बी0एड0 प्रशिक्षुओं को अपने विद्यार्थियों को अनुशासनबद्ध रखना चाहिए जिससे उनके विद्यालय का स्तर ऊँचा हो जिसके फलस्वरूप प्रधानाध्यापकों की उनसे सकारात्मक अपेक्षा हो।

9. भावी शोध हेतु सुझाव

- प्रस्तुत अध्ययन केवल जनपदीय स्तर पर किया गया है भविष्य में इसे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को ही लिया गया है भविष्य में हम सरकारी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को भी लेकर कर सकते है।
- प्रस्तुत अध्ययन में बी0एड0 प्रशिक्षित अभ्यर्थियों को लिया गया है भविष्य में हम विद्यार्थियों अथवा बी0एड0 प्रशिक्षण संस्थानों को लेकर भी कर सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. बसु, बी0डी0 (1989), हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इण्डिया, मेरठः कोस्मो पब्लिकेशन।
2. गैरेट, एच0ई0 एवं बुडवर्ग, आर0ए0 (1992). शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, लुधियानाः कल्याणी पब्लिशर्स।
3. जयपालन, एन0 (2000), हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया, नई दिल्लीः अटलान्टिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
4. राव, भास्कर द्विगुमूर्ति एवं हर्षित (2000), एजुकेशन इन इण्डिया, नई दिल्लीः ए0पी0एच0 पब्लिशिंग कॉपोरेशन।
5. कौल, लोकेश (2008), शैक्षिक अनुसन्धान की कार्य प्रणाली, नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0।